फसल प्रति हेक्ट.	-	रू. 75,000 (प्रथम वर्ष में)
स्लिप क्रय मूल्य	-	रू. 0.50/स्लिप
आय/हेक्टेयर	-	रू. 1,60,000 प्रति वर्ष
तेल मूल्य	-	रू. 400-700/किलो

•••

औषधीय एवं सगंध पौधों से संबंधित ;

- रोपणी तकनीक
- कृषि तकनीक
- पौध सामग्री की उपलब्धता
- बीज उपलब्धता
- बाजार व्यवस्था
- औषधीय निर्माणियों की मांग
- निर्माणियों एवं कृषकों में संबंध

जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर सविस्तार जानकारियाँ प्राप्त करने के लिये निम्न पते पर सम्पर्क कर सकते हैं ;

संचालक
राज्य वन अनुसंधान संस्थान,
पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) - 482 008
फोन - (0761) 665540 फेक्स - (0761) 661304

Printed at : Reliable Printed Products, Jbp. ✆ : 315501

एस.एफ.आर.आई. प्रचार पत्रिका - 28

लेमनग्रास

(सिंबोपोगॉन फ्लेक्सियोसस)

जैव विविधता एवं औषधी पौध शाला

म.प्र. राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

2001

लेमन ग्रास
(सिंबोपोगॉन फ्लेक्सियोसस)

लेमन घास को नीबू घास या चाइना घास के नाम से भी जाना जाता है । इस सुगंधीय घास की व्यवसायिक खेती केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आसाम, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश में मुख्य रूप से की जाती है । मध्यप्रदेश में इसकी खेती कुछ समय पूर्व ही शुरु की गयी है । लेमन घास तना रहित या छोटे तने वाली घास है। इसकी पत्ती सकरी व लंबी होती है । इसमें सिट्रल नामक पदार्थ पाया जाता है जिससे नीबू की तरह खुशबू आती है। इसके बीज पेनिकल में निकलते हैं जो कि बहुत हल्के होते हैं।

कृषि तकनीक

यह घास बलुई, दोमट मिट्टी, अनुपजाऊ भूमि, कम वर्षा, अच्छी जल निकासी वाली या ढलान वाली भूमि में उगाई जा सकती है । यह ऊष्ण, समशीतोष्ण व आर्द्र जलवायु तथा 10-40 से.ग्रे. तापमान में अच्छी हो सकती है । इसका प्रवर्धन स्लिप द्वारा किया जा सकता है । यह पहले से लगाई गई फसल से अलग की जा सकती है तथा एक पौधे से 75 से 100 स्लिप प्राप्त की जा सकती है । इसकी कई किस्में विकसित की गई है जैसे सी.के.पी. 25 (तेल प्रतिशत 80-90), आर.आर.एल.-16 (तेल प्रतिशत-30), ओ.डी. -19 (तेल प्रतिशत-55) । एक हेक्टेयर के रोपण हेतु करीब 75,000 स्लिप की आवश्यकता पड़ती है । स्लिप का रोपण जुलाई से सितंबर के बीच तथा फरवरी से मार्च में किया जा सकता है । स्लिप के रोपण के समय 60 से.मी. x 30 से.मी. का अंतराल रखा जाना चाहिये तथा कतारबद्ध तरीके से लगाई जाना चाहिये । रोपण के पहले करीब 15 टन खाद प्रति हेक्टे. की दर से खेतों में डालना चाहिये । रोपण के तुरंत बाद वर्षा के पानी के अभाव में सिंचाई की जानी चाहिये । वर्षा के बाद 15 दिनों के अंतर से सिंचाई की आवश्यकता होती है । इस फसल में दीमक का प्रकोप फसल को नुकसान दे सकता है । अतः बी.एच.सी. का 10 प्रतिशत धोल या नीम की खली 200 कि.ग्रा. प्रति हेक्टे. की दर से छिड़काव किया जाना चाहिये ।

उपज तथा आर्थिकी

नीबू घास की पहली कटाई रोपण के 100 दिन बाद की जा सकती है । दूसरी कटाई कम से कम 90 दिन के अंतराल के बाद की जानी चाहिये । कटाई जमीन से 15 से.मी. लंबाई को छोड़ कर की जानी चाहिये । इसे 24 घंटे के अंदर आसवित कर लिया जाना चाहिये । कटाई के 10 दिन पहले सिंचाई बंद कर देनी चाहिये । एक हेक्टेयर से 100 क्विंटल शाक प्रति कटाई प्राप्त होती है । इससे 400 कि.ग्रा. तेल प्रति वर्ष प्राप्त किया जा सकता है । नीबू घास का तेल रुपये 400-700 प्रति कि.ग्रा. प्राप्त किया जा सकता है ।